ग्वालियर स्तम्भलेख [मिहिरभोज]

ग्वालियर स्तम्भ लेख मिहिरभोज के जीवन एवं उसकी उपलब्धियों पर प्रकाश डालता है। यह प्रयागउस्तम्भ लेख एवं ग्रायेहोल अभिलेख के समान है। मिहिरभोज की वंशावली एवं उसके विजयों का वर्णन इस प्रशस्ति में किया गया है। भोज प्रथम 840 ई० अपने पिता रामभद्र के बाद गद्दी पर बैठा। भोज की माता का नाम अप्पा देवी था बराह के ताम्रपत्र लेख से जो विक्रम सम्वत् 893 एवं 836 ई० भोज की तिथि निर्धारित करता है। इस अभिलेख में मिहिरभोज की उपाधि दी गयी है। लेकिन सभी स्थानों पर भोज नाम पाये गये हैं। ग्वालियर अभिलेख में उसे अभिधान एवं मिहिर की उपाधि से विभूषित किया गया है जिसकी पुष्टि राष्ट्रकूट अभिलेख से होती है। दौलतपुर अभिलेख में उसे प्रभास के नाम से पुकारा गया है। प्रभास और मिहिर उसकी उपाधि थी। ग्वालियर चतुर्भुज अभिलेख एवं चाँदी के सिक्कों में आदि वराह कहा गया है। भोज की तुलना विष्णु से की गयी है। यह भगवती दुर्गा का उपासक था। भोज सर्वप्रथम अपने साम्राज्य को सुव्यवस्थित किया जो रामभद्र के समय अव्यवस्थित हो गया था।

सर्वप्रथम भोज ने बुंदेलखंड पर आक्रमण कर उसे अपने राज्य में मिला लिया। बराह ताम्रपत्र 836 ई० में जारी किया गया जिसमें पुराने बलकाग्रहार जो अधमवारा वैश्य और कलंजर मंडल में पड़ता था फिर से पुर्नजीवित किया। नागभट्ट के समय यह प्रारम्भ किया गया था। स्थानीय परम्परा से पता चलता है कि चंदेल के उदय के पूर्व बुंदेलखंड प्रतिहारों के अधीन था।

यशोवर्मन चंदेल के पूर्व चंदेल भी प्रतिहारों के सामंत थे। चंदेलों के अभिलेखों में चंदेल राजाओं को नृप और गणपति कहा गया है। 843 ई० में भोज ने दूसरा अभिलेख खुदवाया जो गुर्जर भूमि जोधपुर या मारवाड़ से प्राप्त हुआ था। वत्सराज और नागभट्ट के समय यह प्रतिहार साम्राज्य में था लेकिन रामभद्र के समय यह प्रदेश स्वतन्त्र हो गया और पुनः 843 ई० के पूर्व भोज ने इन प्रदेशों पर विजय प्राप्त कर अपने साम्राज्य का अंग बनाया। कल्हा प्लेट गोरखपुर से प्राप्त हुआ है जिसमें विक्रम सम्वत् 1134, 1177 के आधार पर भोज का राज्य उत्तर में हिमालय की तराई तक विस्तृत था। इस अभिलेख में कहा गया है कि गुणाम्बोधि देव जो कलचुरि परिवार का प्रमुख था भोजदेव से जमीन प्राप्त किया था। चाटसु के अभिलेख में कहा गया है कि हर्षराज गुहिला ने उत्तर के राजाओं पर विजय प्राप्त किया था भोजदेव को घोड़ा उपहार स्वरूप दिया। हर्षराज प्रतिहार नरेश भोज का सामंत था जिसने भोजदेव की इच्छा से उत्तर के राजाओं को पराजित किया था।

मध्यप्रदेश में अपनी एकता स्थापित करने के बाद भोजदेव ने उत्तर के पालवंशीय सम्राट देवपाल की ओर प्रस्थान किया। बादलस्तम्भ लेख एवं मुंगेर लेख में देवपाल को समस्त उत्तरापथ का स्वामी कहा गया है। प्रथम प्रयास में भोजदेव ने अपने सामंतों के साथ पाल साम्राज्य के पश्चिमी हिस्से पर अपना आधिपत्य कायम कर लिया। कल्हा प्लेट एवं ग्वालियर अभिलेख में कहा गया है कि भोजदेव ने धर्मपाल के पुत्र को पराजित किया लेकिन बादल अभिलेख के अनुसार देवपाल भोजदेव के अग्रिम

Scanned with CamScanner

अभियान को रोकने में सफल हो गया था इसके बाद भोज ने दक्षिण की ओर प्रस्थान किया। महेन्द्रपाल II प्रतापगढ़ के राजपुताना से प्राप्त हुआ है उल्लेख है कि भोजदेव को चौहानों की मदद से ही भोज ने दक्षिणी राजपुताना एवं उज्जैन के निकटवर्ती प्रदेशों पर जो नर्मदा नदी के विजय प्राप्त कर ली। ये प्रदेश राष्ट्रकूटों के अधीन थे। राष्ट्रकूटों के अथक प्रयास के बाद भी भोजदेव पराजित नहीं हुआ। बागुमारा लेख से पता चलता है कि ध्रुव द्वितीय ने ही गुर्जर राजा को पराजित किया था। इस लेख की तिथि शक सम्वत ७८९ या ८६७ ई० दिया गया है। इसके पहले किसी अभिलेख में इसका वर्णन नहीं प्राप्त होता है। भोज ने ८३६ ई० के बाद इन सभी प्रदेशों पर विजय प्राप्त की थी। ८७५ ई० के भोजदेव के लेख से स्पष्ट होता है कि उसने कृष्ण II राष्ट्रकूट को बाध्य कर दिया कि अपने भू भाग पर लौट जाए। भोजदेव की इच्छा तीन देशों पर विजय करने की थी, इन्द्रतृतीय के ९३५ बागुमारा लेख गुर्जर राजा के साथ युद्ध का वर्णन किया गया है। ८८८ ई० में कृष्ण II गुर्जरों का सामंत था। यह लेख उज्जैनी भाषा में लिखा गया है। इस अभिलेख से पता चलता है कि भोजदेव की प्रभुता में किसी प्रकार की कमी नहीं आयी थी। गुर्जर राजा भोजदेव एक छत्र सम्राट था।

करनाल जिला के पेहो अभिलेख जो ८८२ ई० में भोजदेव ने खुदवाया था से पता चलता है कि भोज उत्तर पश्चिम की ओर सैनिक अभियान किया था और सतलज नदी

Scanned with CamScanner

के भू भाग पर अधिकार कर लिया। राजतरंगिणी में भी इसका उल्लेख है कि अधिराज भोज ने पंजाब पर विजय प्राप्त कर तक्कियाक राज परिवार को द्वारपाल बना दिया था।

अधिराज की उपाधि भोजदेव के लिए ही प्रयुक्त किया गया है एवं उसे कन्नौज का सम्राट बताया गया है। Dr H.C. Ray चौधरी के अनुसार भोज का अधिकार सौराष्ट्र एवं काठियावाड़ पर था। आहार प्रशस्ति इस तथ्य की पुष्टि करती है एवं निम्नलिखित तिथियों का उल्लेख करती है. ८६४, ६५, ८६५, ६६, ८६७, ६८, ८८६, ८७ ८८८, ८९, ९०२, ३, ९०४, ५ इत्यादि। विद्वानों का मत है कि आहार प्रशस्ति में हर्ष संवत् २५९ का उल्लेख है जो ८६५, ८६६ का हो सकता है। भोजदेव का अंतिम तिथि ८९३ ई० प्राप्त हुआ है। इस प्रकार भोजदेव का साम्राज्य ग्वालियर प्रशस्ति के अनुसार उत्तर पश्चिम में सतलज नदी उत्तर में हिमालय की तराई पूरब में पाल साम्राज्य का पश्चिमी भाग दक्षिण में बुंदेलखंड एवं नर्मदा नदी तक के भू-भाग दक्षिण-पश्चिम में ~~राजपुताना~~ में सौराष्ट्र एवं पश्चिम में राजपुताना तक विस्तृत था। अरब व्यापारी सुलेमान ८५१ ई० में भारत आया था उसने गुर्जर राजा भोज को कन्नौज का सम्राट बताया है। उसने लिखा है कि भोजदेव के पास अपार सेना थी। भारतीय राजाओं में भोजदेव की ~~घुड़सवार~~ समान उत्तम घुड़सवार फौज किसी के पास नहीं था। भोजदेव अरब राज्य का शत्रु था भोजदेव के राज्य में सोने एवं चाँदी से ही

Scanned with CamScanner

व्यापार होते थे। सोने-चाँदी खनिज के खान इस देश में थे। इन विवरणों से पता चलता है कि भोजदेव का राज्य सम्पन्न था। आंतरिक एवं बाह्य सुरक्षा ठीक था। शासन प्रबन्ध ठीक थे।

भोज देव के चाँदी के सिक्के प्राप्त हुए हैं जिसे आदिवराह प्रकार माना गया है। ब्राह्मी भाषा में पृष्ठ पर लिखा है कि श्रीमद् आदि वराह। उसके नीचे अग्निकुंड बना हुआ है सिक्के के पीछे एक आदमी वराह के मुख के रूप में प्रदर्शित किया है। यह भगवान विष्णु के ~~वराह अवतार~~ वराहावतार को प्रदर्शित करता है। जिसके आगे सूर्य का चक्र दिखलाया गया है। सिआदोनी लेख इसे श्रीमद आदि वराह धर्म बतलाता है। भोजदेव अपने समय का प्रतापी सम्राट था। वह हिन्दू धर्म का पोषक था। उसके समय में ब्राह्मण धर्म का उत्थान हुआ उसे विद्वानों का आश्रय दाता कहा गया है।